ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 4 कुल पृष्ठ-8 11 से 17 अक्टूबर, 2018 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075

पं. नरेन्द्र भवन, राज मोहल्ला, हैदराबाद में 30 सितम्बर, 2018 को

श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् का प्रथम अधिवेशन भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

परिषद् के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया उद्घाटन

सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने अधिवेशन की सम्पूर्ण व्यवस्था एवं संयोजन का निभाया दायित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के तत्वावधान में आयोजित श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् के प्रथम अधिवेशन का उद्घाटन प्रातः यज्ञ के पश्चात् गुरुकुल परिषद् के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। परिषद् के संरक्षक स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. सोमदेव शास्त्री जी, परिषद् के महामंत्री डॉ. आनन्द कुमार पूर्व आई.पी.एस., विदुषी आचार्या डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा आदि ने दीप प्रज्ज्वलित करने में सहयोग प्रदान किया।

ज्ञातव्य हो कि गत् 6, 7, 8 जुलाई, 2018 को गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में सम्पन्न अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन में भारत के समस्त गुरुकुलों को संगठित करने के लिए सर्वसम्मति से श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् का गठन हुआ था और उसके अध्यक्ष के रूप में लगभग एक दर्जन गुरुकुलों के संचालक एवं संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द जी को निर्वाचित किया गया था। उसी कड़ी में श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन 30 सितम्बर, 2018 को पं. नरेन्द्र भवन हैदराबाद में बड़ी भव्यता के साथ आयोजित किया गया। अधिवेशन में अनेक गुरुकुलों के आचार्य एवं आचार्याएँ, गुरुकुलों के अधिष्ठाता एवं अधिकारी सम्मिलित हुए। आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना की ओर से अधिवेशन की सम्पूर्ण व्यवस्था अत्यन्त सुन्दर ढंग से की गई थी। आगन्तुक आचार्य वर्ग तथा अन्य अतिथियों के भोजन, आवास तथा यात्रा व्यय का पूरा भार सभा ने वहन किया। आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के प्रधान ठा. लक्ष्मण सिंह आर्य एवं मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य सहित सभा के सभी प्रमुख पदाधिकारियों ने अधिवेशन में भाग लेने वाले सभी आचार्यवृन्द के आतिथ्य में किसी प्रकार की कोर–कसर बाकी नहीं छोड़ी। पं. नरेन्द्र भवन के वातानुकूलित सभागार में प्रातः 10 बजे से सायं 7 बजे तक निरन्तर चले अधिवेशन में विविध विषयों पर विद्वानों, वक्ताओं ने अपने विचार प्रकट किये। इस अवसर पर मुख्य रूप से गुरुकुलों के पाठ्यक्रम, वैदिक गुरुकुल परिषद् के संविधान, गुरुकुलों की विभिन्न समस्याओं एवं गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति को वैकल्पिक शिक्षण पद्धति के रूप में स्थापित करने के साथ–साथ वैकल्पिक सामाजिक व्यवस्था पर चिन्तन–मनन किया गया और महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किये गये।

अधिवेशन का संचालन परिषद् के महामंत्री डॉ. आनन्द कुमार ने किया और कार्यवाही का संयोजन गुरुकुल पौंधा के आचार्य डॉ. धनंजय जी ने संभाला। जिन विद्वानों ने तथा आचार्यों ने अधिवेशन में अपने विचार व्यक्त किये उनमें मुख्यरूप से स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती, स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी, स्वामी नित्यानन्द सरस्वती जी, डॉ. सोमदेव शास्त्री, श्री प्रकाश आर्य सभा मंत्री (श्री सुरेश चन्द्र आर्य पक्ष), डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा, डॉ. सुमेधा आचार्या, डॉ. सुकामा, डॉ. प्रियम्वदा वेदभारती, डॉ. पवित्रा विद्यालंकार, डॉ. धारणा याज्ञिकी, डॉ. गायत्री आचार्या, आचार्या आदेश, परिषद् के कोषाध्यक्ष डॉ. जयेन्द्र आचार्य, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री, डॉ. योगेश शास्त्री, डॉ. बिजेन्द्र शास्त्री, श्रीमती संतोष आर्या, आचार्य आनन्द प्रकाश, स्वामी उद्गीथानन्द, डॉ. नागेन्द्र मित्र शास्त्री, आचार्य सुशील आर्य, डॉ. कोमल कुमार, आचार्य जय कुमार, श्री धर्मपाल शास्त्री, श्री ज्ञानवीर शास्त्री, आचार्य हरिदत्त उपाध्याय, आचार्य रामपाल शास्त्री, आचार्य चन्द्रभूषण शास्त्री, आचार्य भद्रकाम वर्णी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

अधिवेशन में परिषद् की नियमावली, वैदिक सिद्धान्त पाठ्यक्रम, प्रतियोगिताओं का आयोजन आदि प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किये गये। परिषद् के अन्तर्गत संचालित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों के लिए कुछ उप समितियों का भी गठन किया गया। गुरुकुल परिषद् को एक मजबूत संगठन बनाने के लिए धन संग्रह की अपील भी की गई और परिषद् के लिए एक विशेष कोष बनाने का भी निर्णय लिया गया। कार्यक्रम के कुशल संयोजन का निर्वहन प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने अत्यन्त कुशलता के साथ निभाया।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

भारतीय संस्कृति और नारी वैशिष्टय

– सुनीता कुमारी, रुड़की, उत्तराखण्ड

भारतीय संस्कृति में नारी एक प्रेरणा है। यह विविध रूपों में मनुष्य के समक्ष अपनी प्रेरक छवि प्रस्तुत करती है। कभी वह माँ बनकर ममता और वात्सल्य की देवी के रूप में सर्वत्र पूजनीय बन जाती है। कभी पत्नी के रूप में सेवा और त्याग की प्रेरणा से सम्पूर्ण जगत् को निहाल कर देती है। कभी बहन के रूप में यह प्रेम की वह जीती जागती तस्वीर बन जाती है जो प्रत्येक मानव के मन मे आदर और श्रद्धा का भाव उत्पन्न करती है। नारी चाहे कितने ही रूपों में क्यों न बंटी हुई हो प्रत्येक अवस्था में लज्जा उसका सौन्दर्य है, कोमलता उसका वैभव है, घर उसका साम्राज्य है। यही नारी का स्वभाव है, उसकी प्राकृतिक सम्पदा है। सचमुच इस रूप में यह प्रकृति की एक अनमोल देन है जिसे भारतीय संस्कृति ने प्रतिष्ठापित कर विश्व रंगमंच पर एक अनुपम सिद्धान्त प्रस्तुत किया है।

इस जगतीतल पर पाए जाने वाले सभी प्राणी दो वर्गों में विभाजित हैं। मादा एवं नर। नर पुरुष जाति का सूचक है वहीं मादा स्त्री जाति का। संसार में दोनों का महत्त्व समान है। लेकिन यह महत्त्व दुर्भाग्यवश सभी को मान्य नहीं है। प्रायः स्त्रियों को पुरुषों की अपेक्षा कमजोर, अशक्त व कम प्रतिभा सम्पन्न समझा जाता है। बहुतेरे ऐसे कार्यों में इन्हें मात्र इसीलिए भागीदार नहीं माना जाता है, क्योंकि शारीरिक शक्ति से वे उनके लिए उपयुक्त नहीं है। एक दृष्टि से यह सत्य हो सकता है परन्तु सर्वाङ्ग नहीं। स्त्रियाँ शारीरिक दृष्टि से पुरुषों की अपेक्षा भले ही दुर्बल हो सकती है। परन्तु मानसिक शक्ति एवं बुद्धि कौशल में वह उनसे किसी भी क्षेत्र में कमजोर नहीं मानी जाती है। अवसर आने पर स्त्रियों ने इसे सिद्ध कर दिखाया है। लेकिन पुरुष प्रधान समाज इस तथ्य को स्वीकार करना नहीं चाहता है। अतः स्त्रियों को समाज में वह स्थान नहीं मिल पाया है, जो उन्हें प्राप्त होना चाहिए था। सौभाग्यवश इधर नए विचारों का सृजन प्रारम्भ हुआ है, परिणामतः स्त्रियों की स्थिति में होने वाले अवनति के क्रम पर रोक लगी है। आज नारी जीवन के अनेक क्षेत्रों में पुरुषों के साथ मिलकर उसी तरह से कार्य कर रही है, जिस प्रकार कभी वह प्राचीन भारतीय संस्कृति की आवश्यक अंग हुआ करती थी।

भारतीय संस्कृति और नारी

भारतीय संस्कृति में नारी को पूजनीय माना गया है। इन्हें देवी स्वरूपा समझकर इनकी आराधना की गई है। इन्हें संस्कृति का रक्षक कहा गया है। जप, तप, व्रत, संयम, नियमादि जिन्हें भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग स्वीकार किया गया है, ये सब नारी के सहयोग से ही जीवित हैं। स्त्रियाँ ही इनको अपने जीवन में निरन्तर उतार कर मनुष्य को संस्कृति का पाठ पढ़ाती हैं। माधुर्य, प्रेम, उत्सर्ग, सेवा, निष्ठा, श्रद्धा आदि मनुष्य की वे कोमल भावनाएँ हैं जिन पर धर्म, सदाचार, नैतिकता आदि सभ्याचार के प्रासाद टिके हुए हैं। इन्हें भारतीय संस्कृति का हृदय स्थल माना जाता है। नारी ही संस्कृति रूपी इस हृदय की धड़कन बन कर उनमें चेतना का संचार करती रहती है। इसलिए भारतीय संस्कृति में नारी को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है।

भारतीय चिन्तन में ब्रह्मा अथवा ईश्वर को चरम सत्ता माना गया है। इन्हें ही सम्पूर्ण सृष्टि का कर्ता नियन्ता तथा संहारकर्ता भी स्वीकार किया गया है। नारी भी विश्व की एक संरचना मात्र है, जिसका निर्माता वही परमपिता ब्रह्मा है, जिसने विश्व की अन्य सभी वस्तुओं का निर्माण किया। परन्तु कभी–कभी वह स्वयं नारी की महत्ता से विस्मृत हो उसके संसर्ग की कामना करता है। नारी की विशिष्टता के समक्ष सम्पूर्ण ईश्वरीय शक्तियाँ छोटी पड़ने लगती हैं। नारी ही ईश्वर की वह श्रेष्ठ रचना है जो आज तक मानवता को जीवित रखे हुए है। यही नितान्त अबोध, दुर्बल शिशु का सम्यक् लालन–पालन कर उसे इस योग्य बनाती है, ताकि वह विश्व संस्कृति के निर्माण में सहभागी बन सके। सचमुच भारतीय संस्कृति में नारी वैशिष्टय की यह पराकाष्ठा है जो उसे अत्यन्त ओजस्वी स्वरूप प्रदान करती है।

संस्कृति का प्रसंग बने और वहाँ सभ्यता का प्रश्न खड़ा न हो, यह असम्भव है। इन दोनों में अंग–अंगी परस्पर असमान होते हुए कभी अलग नहीं हो सकते, ठीक उसी तरह संस्कृति और सभ्यता को भी समझना चाहिए। संस्कृति और सभ्यता का युग्म परस्पर साथ–साथ चलता रहता है। यह ठीक है कि सभ्यता का जन्म संस्कृति के कोख से होता है, लेकिन कभी–कभी संस्कृति भी सभ्यता के नाम से पहचानी जाती है। इतना होते हुए भी संस्कृति सभ्यता से अधिक महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि यह सार्वभौमिक होती है जबकि सभ्यता परिवर्तनशील संस्कृति पर ही टिकी हुई है। सभ्यता मिट सकती है, लेकिन संस्कृति का अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होता।

संस्कृति को जीवित रखने का काम नारी ही करती है। क्योंकि यही अपने आपको संस्कृति के साथ जोड़कर रखती है। संस्कृति के साथ जुड़ना ही संस्कृति को जिन्दा रखना है। भारतीय चिन्तन में नारी के एकनिष्ठ स्वभाव को उसकी संस्कृति कहा गया है और भारतीय नारी अपनी इस एकनिष्ठ छवि को अक्षुण्ण रखती है। इसके लिए वह प्राण पण से तत्पर रहती है। इस प्रकार वह संस्कृति की एक जीती जागती तस्वीर नजर आती है। दूसरी ओर पुरुष सभ्यता की भांति परिवर्तनशील रहता है। वह न तो भविष्य की चिन्ता करता है और न अतीत में आस्था रखता है। वह केवल वर्तमान को स्वीकार करता है। वह प्रायः सेवा भावना से दूर रहना चाहता है। यही कारण है कि उसे न अपनों से बड़ों की सेवा का चाव होता है और न ही वह अपने से छोटे बालकों के लालन–पालन में रुचि रखता है। परन्तु नारी को संस्कार रूप में मिला संस्कृति प्रेम ही उसे बड़ों का आदर करना और छोटों से प्रेम बनाए रखने की प्रेरणा प्रदान करता है।

भारतीय संस्कृति में नारी एक प्रेरणा है। यह विविध रूपों में मनुष्य के समक्ष अपनी प्रेरक छवि प्रस्तुत करती है। कभी वह माँ बनकर ममता और वात्सल्य की देवी के रूप में सर्वत्र पूजनीय बन जाती है। कभी पत्नी के रूप में सेवा और त्याग की प्रेरणा से सम्पूर्ण जगत् को निहाल कर देती है। कभी बहन के रूप में यह प्रेम की वह जीती जागती तस्वीर बन जाती है जो प्रत्येक मानव के मन मे आदर और श्रद्धा का भाव उत्पन्न करती है। नारी चाहे कितने ही रूपों में क्यों न बंटी हुई हो प्रत्येक अवस्था में लज्जा उसका सौन्दर्य है, कोमलता उसका वैभव है, घर उसका साम्राज्य है। यही नारी का स्वभाव है, उसकी प्राकृतिक सम्पदा है। सचमुच इस रूप में यह प्रकृति की एक अनमोल देन है जिसे भारतीय संस्कृति ने प्रतिष्ठापित कर विश्व रंगमंच पर एक अनुपम सिद्धान्त प्रस्तुत किया है।

दुर्भाग्यवश आज कुछ स्त्रियाँ अपने स्वाभाविक एवं प्राकृतिक स्वरूप को त्यागकर विकृत यौन विकार का शिकार बन रही हैं। वे विकृति को अपनाने में गर्व का अनुभव कर रही हैं। उनकी इस मनोविकृति के कारण सम्पूर्ण नारी जाति की गरिमा धूल–धूसरित हो रही है। उनके कारण ही आज नारी जाति का गौरव खण्डित हो रहा है। वे अपने घर रूपी राज्य का त्याग कर, प्राकृतिक सौन्दर्य को अप्राकृतिक साधनों से छिपाकर, महफिल की जीनत बनना चाह रही हैं। उनका यह रूप समाज को किसी तरह की प्रेरणा न देकर उसमें एक दुर्व्यवस्था उत्पन्न कर रही है। इनके कारण समाज में विभिन्न प्रकार की विकृतियों का जन्म हो रहा है। भारतीय संस्कृति में नारी के इस कृत्य की कभी भी प्रशंसा नहीं की गई है।

विकृतियों का शमन ही भारतीय संस्कृति की विशेषता है। भारतीय संस्कृति में उन नारियों की यशोगाथा का चित्रण बड़े ही तेजस्वी ढंग से प्रस्तुत किया गया है जिन्होंने विकृतियों को दूर करने के लिए संघर्ष किया। आज भी ऐसी स्त्रियों को समाज में आदरणीय स्थान प्राप्त है तथा उन्हें उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करने में भारतीय समाज गर्व का अनुभव करता है। उनसे प्रेरणा लेकर समाज में व्याप्त विकृतियों को मिटाने के लिए संघर्ष करता है। अतः स्त्रियों को अपने स्वाभाविक गुणों का कभी त्याग नहीं करना चाहिए। उन्हें अपने राज्य की सीमा का कभी भी अतिक्रमण नहीं करना चाहिए। क्योंकि ये सभी कृत्य कभी भी प्रशंसनीय नहीं हो सकते हैं। इन्हें भारतीय संस्कृति कभी भी स्वीकार नहीं कर सकती हैं। हाँ! इनके आधार पर उन्हें शूर्पणखा की भांति अपमान का दंश अवश्य प्राप्त हो सकता है, सीता की तरह पूजा और आदर नहीं।

नारी शक्ति बनाम सर्वशक्ति

मनुष्य प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ रचना है। स्त्री और पुरुष ये मानव के दो रूप हैं। अतः दोनों को सर्वश्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न होना चाहिए, समान शक्ति का धारक होना चाहिए। परन्तु दुर्भाग्यवश कुछ लोग इस विचार से सहमत नहीं होते हैं। वे प्रायः यह प्रश्न खड़े करते हैं कि क्या स्त्रियों में भी कोई शक्ति होती है? यहाँ वे भूल जाते हैं कि नारी नाम ही शक्ति का पर्याय है। इसके साक्षी हैं भारतीय संस्कृति में स्वीकृत विपुल ग्रन्थ। स्त्रियाँ महान् शक्ति की धारिका है। पुरुष जो स्वयं को स्त्री जाति का रक्षक एवं अपने को शक्ति का पुंज समझता है वह भी नारी शक्ति की महत्ता के समक्ष नतमस्तक रहता है। भारतीय संस्कृति में नारी शक्ति की महिमा का गुणगान किया गया है। इसे

शेष पृष्ठ 6 पर

33वीं पुण्यतिथि 8 अक्टूबर 2016 पर विशेष

युवा हृदय सम्राट क्रांतिकारी सामाजिक क्रांति के प्रेरक कर्मयोगी श्री मदन सिंह आर्य

महर्षि दयानंद सरस्वती के वैचारिक क्रांति के योद्धा, आर्य समाज और आर्य वीर दल के सिपाही, महान देशभक्त, सामाजिक क्रांति के उद्‌बोधक, युवकों के हृदय में राष्ट्रीय एकता और अखंडता के मजबूत इरादों का बीजारोपण करने वाले कर्मयोगी श्री मदन सिंह आर्य अपने अल्प जीवनकाल में इतना बृहद कार्य करके चले गए कि युगों–युगों तक उनका नाम इतिहास के पन्नों में याद किया जाता रहेगा। आने वाली युवा पीढ़ियाँ उनके व्यक्तित्व से प्रेरणा पाकर देश के लिए समर्पित होने के लिए संकल्पवद्ध होती रहेगी।

उनका जन्म 25 अक्टूबर 1931 को जोधपुर में हुआ था। आपकी प्रारंभिक शिक्षा जोधपुर शहर में ही श्री उम्मेद हाई स्कूल में हुई। स्कूली शिक्षा के साथ साथ उन के जीवन पर महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों का गहरा प्रभाव पड़ता चला गया। देशभक्त क्रांतिकारियों के साथ रह कर वह भी 1947 की आजादी के असली हकदार बन गए। आर्य समाजों के कार्यक्रमों और आर्य वीरदल के शिविरों में सक्रिय भाग लेते थे। गुलामी की जंजीरों को तोड़ने के लिए उन्होंने आर्य समाज के माध्यम से राजस्थान प्रांत में, जोधपुर, जयपुर, अजमेर, ब्यावर, पाली, पीपाड़ अनेकानेक स्थानों पर क्रांति एवं बगावत की ज्योति प्रज्ज्वलित की।

20 अप्रैल 1951 को भारतीय सेना में चले गए उन्होंने गोवा मूवमेंट की अग्रिम पंक्ति में भाग लिया। अपनी बटालियन के द्वारा उन्होंने फ्रांसीसियों को गोवा के किले के अंदर सुरा–सुंदरियों के साथ नग्नावस्था में रंगरेलियां मनाते गिरफ्तार कर बंदी बनाया।

1962 में भारत–चीन युद्ध 1965 में भारत–पाक लडाई और 1971 में फिर भारत–पाक युद्ध में सच्चे भारतीय सैनिक के रूप में भाग लिया परिणाम स्वरुप उन्हें अपनी योग्यता के आधार पर पदोन्नत कर रिसालदार बनाया गया। उन्होंने हाईएस्ट मिलिट्री एजुकेशन सर्टिफिकेट हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किये। उनको पाकिस्तान की 1965 की लड़ाई में भारतीय सेना में, रक्षा मेडल एवं समर सेवा स्टार से सम्मानित किया गया। उनकी इन उपलब्धियों से पता चलता है कि श्री मदन सिंह आर्य शारीरिक एवं मानसिक रुप से पूर्ण परिपक्व थे। 25 मई 1972 में उन्होंने सेना से डिस्चार्ज ले लिया। इस समय वे आर्म्ड कोर में रिसालदार मेजर थे।

परिश्रम एवं योग्यता के आधार पर मदन सिंह आर्य सेना में जल्दी ही जूनियर कमीशन ऑफिसर बन गए। उन्हें खेलकूद का बहुत शौक था। सर्विसेस बॉक्सिंग प्रतियोगिता में उन्होंने स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

जब–जब सेना से छुट्टियों पर आते वे अपना संपूर्ण समय आर्य वीर दल के माध्यम से पूरे राजस्थान प्रांत में दौरे करते और युवकों के चरित्र निर्माण, योगाभ्यास, जिम्नास्टिक, बॉक्सिंग, मलखंभ, सैनिक शिक्षा, प्राथमिक चिकित्सा आदि की शिक्षा का प्रचार व प्रसार करते।

श्री मदन सिंह आर्य के पास चरित्र रूपी महान खजाना था जिन महान कार्यों के लिए उनका जन्म हुआ वास्तव में राष्ट्र को उनके कार्यों की आवश्यकता थी। उनका सम्पूर्ण जीवन नौजवानों को संगठित कर अपने राष्ट्र के प्रति समर्पित भावना से देश की एकता और अखंडता की सुरक्षा के लिए सांप्रदायिक सद्‌भावना बनाने के लिए लगा रहा। उनका कहना था कि सामाजिक, आर्थिक, और राजनैतिक विषमता को दूर करने के लिए सबसे पहले नौजवानों को क्रांतिकारी कदम उठाना चाहिए, ताकि हमारे राष्ट्र का चरित्र निर्माण हो सके। उनका सारा जीवन सादा और उच्च विचारों व कर्म से ओत–प्रोत एवं संघर्ष साधना का प्रतिरूप रहा।

मदन सिंह आर्य सौम्य विद्रोही थे, उनका जीवन कर्मठता, साधना और संभावनाओं से भरपूर था। उन्होंने 40 वर्ष राष्ट्रीय समाज की एक समाज सुधारक की भांति निस्वार्थ भावना से सेवा की। वे महर्षि दयानंद के वैचारिक आंदोलन के भागीदार आर्यसमाजी थे। युवकों में अपनी कार्य पद्धति, तर्क शक्ति और वैज्ञानिक व्याख्या से अमिट छाप छोड़ते थे।

वे जहां भी जाते मूर्तिपूजा, सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, अंधविश्वास, पाखंड, छुआछूत, जातिवाद और धार्मिक अंधता का स्पष्ट एवं कठोर शब्दों में तीव्र

कर्मयोगी मदन सिंह आर्य

आलोचना करते एवं खुले शास्त्रार्थ की चुनौती देते थे। उन्होंने कहा कि कुप्रथाएं हमारे राष्ट्र की नैतिकता को विश्व भर में कलंकित करती है। अतः युवकों को संगठित होकर जड़वादी नीतियों के विरूद्ध एवं अज्ञान, अन्याय और अभाव के खिलाफ आंदोलन करना चाहिए, ताकि एक विशुद्ध नए समाज की संरचना हो सके। मदन सिंह जी प्रथम तो समाज में श्रेष्ठ व्यक्ति का निर्माण और द्वितीय में समाज को जागृत करना चाहते थे।

सर्वप्रथम 1972 में राजस्थान में प्रान्तीय जिम्नास्टिक संघ की स्थापना स्वयं के कर कमलों द्वारा और प्रान्त के संघ के सचिव पद को भी सुशोभित किया। तत्पश्चात लंबे संघर्ष के बाद प्रांतीय स्तर की 1984–85 ई. में मुक्केबाजी (बॉक्सिंग) संघ की नीव भी आप द्वारा रखी गई।

आपके द्वारा प्रशिक्षित कई युवक राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्ण, रजत एवं कांस्य पदक प्राप्त करने में सफल रहे। कई वर्षों तक राजस्थान के आर्य वीरदल के अधिष्ठाता पद पर कार्य कर के राष्ट्रीय स्तर के आर्य वीर दल शिविरों में बौद्धिक एवं शारीरिक प्रशिक्षण देते रहे। वे आर्य समाज के कई वर्षों तक मंत्री रहे। महर्षि दयानंद स्मृति भवन जिसमें महर्षि को जहर दिया गया था एवं जो 1973 में राज्य सरकार द्वारा आर्य समाज को प्राप्त हुआ उस भवन को मदन सिंह आर्य ने आर्य युवकों का प्रेरणा स्थल बनाया।

मदन सिंह आर्य अपने अल्प जीवन काल में पूरे आत्मविश्वास एवम आत्म–गौरव की ज्योति हजारों युवकों में जलाकर चले गए। उनकी ओजस्वी वाणी बौद्धिक व्याख्यान वह तर्कसंगत वैज्ञानिक विचार पद्धति ने विशेषकर नवयुवकों को आकृष्ट किया। वह जहां भी जाते उठते बैठते नव जवानों का काफिला उनके साथ लगा रहता।

मदन सिंह आर्य का जीवन सफल जीवन था, क्योंकि उनका समस्त जीवन मानव कल्याण में मुख्य रुप से नौजवानों के उत्थान में लगा रहा। इस भौतिक जगत में वह देव ऋण से मुक्त हो गए। इससे महान मूल्य किसी इंसान के जीवन का और हो भी क्या सकता है?

महर्षि दयानंद से प्रेरणा लेकर मदन सिंह यानी हमारे प्रिय "मदन भाईसा" ने आर्यवीर दल नामक संगठन के माध्यम से एक क्रांति का सूत्रपात किया था। उनके पुरुषार्थ से आर्य समाज में नई चेतना आई। आर्य समाज की यज्ञ अग्नि को ठंडा करने वाले षड्यंत्रकारियों से संगठन को मुक्ति मिली तथा आर्य समाज में नए रक्त का संचार हुआ परिणामतः समाज के तीन शत्रु अज्ञान अन्याय एवं अभाव के विरुद्ध संघर्ष का जोरदार सूत्रपात हुआ।

भारतीय दर्शन के अनुसार मदन सिंह आर्य अपने पूर्व जन्म के संस्कार व तत्कालीन जीवन के पुनीत कर्मों से एक प्रभावशाली व्यक्तित्व के पुरुष थे। उस पुण्य आत्मा ने हजारों हज़ारों युवकों को पुण्य कमा कर दिए। अपने जीवन की आखिरी यात्रा में वह नागरिक सुरक्षा सिविल डिफेंस में सी.डी.आई. के पद पर जोधपुर में कार्यरत रहे। उन्हीं दिनों में माउंट आबू पर एनसीसी कैडेट्स को सुरक्षा के मर्म को बताते हुए अपने पंच भौतिक तत्वों से बने शरीर को 8 अक्टूबर, 1985 को सायं 6.45 बजे छोड़ दिया।

आर्य जगत का महान पुरुष आचार्य महर्षि दयानंद का अनन्य भक्त भारत माता के सपूत को ईश्वर ने हमारे बीच से हमेशा के लिए उठा लिया। हजारों आर्यवीर युवकों द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ–साथ उनके कार्यो को पूरा करने का संकल्प लेंगे, ताकि आने वाली पीढ़ी के लिए वह भी एक प्रेरणा के स्रोत बन सकें।

उनका उद्‌बोधन

"आर्य वीर दल" स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा प्रतिपादित आर्य संस्कृति के आधार पर युवकों में चरित्र निर्माण करता है उनमें राष्ट्रीय विश्वबंधुत्व एवं कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का संचार करता है। मनुष्यों में मानवीय गुणों को पल्लवित करता है। समय प्रवाह के साथ–साथ समाज में उत्पन्न अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, दास प्रथा, अस्पृश्यता, नारी उत्पीड़न जैसी कुरीतियों को नेस्तनाबूत कर समाज में पुनः वैदिक धर्म, संस्कृति, सभ्यता एवं कल्याणकारी परंपराओं का निर्वाह कराना "आर्य वीर दल" का प्रमुख लक्ष्य है। इस कार्य हेतु शारीरिक, नैतिक एवं बौद्धिक विकास के पथ प्रशस्त करता है। महर्षि दयानंद के सपनों को साकार करने एवं सौम्य समाज की रचना के लिए संघर्षरत रहा है। अतः अधिक से अधिक संख्या में "आर्य वीर दल" की विचारधारा से जुड़ना चाहिए। – स्वर्गीय मदन सिंह आर्य

– विनीत
नारायण सिंह आर्य, पूर्व उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान

शम्भू दयाल आर्य संन्यास आश्रम, गाजियाबाद के वार्षिकोत्सव पर

छुआछूत एवं जाति प्रथा पर वैदिक दृष्टिकोण विषय को लेकर आयोजित की गई महत्त्वपूर्ण संगोष्ठी

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं सभा कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी रहे प्रमुख वक्ता

श्री सत्यकेतु एडवोकेट ने किया संगोष्ठी का कुशल संयोजन तथा उत्तर प्रदेश के पूर्व मंत्री श्री बालेश्वर त्यागी ने किया मंच संचालन

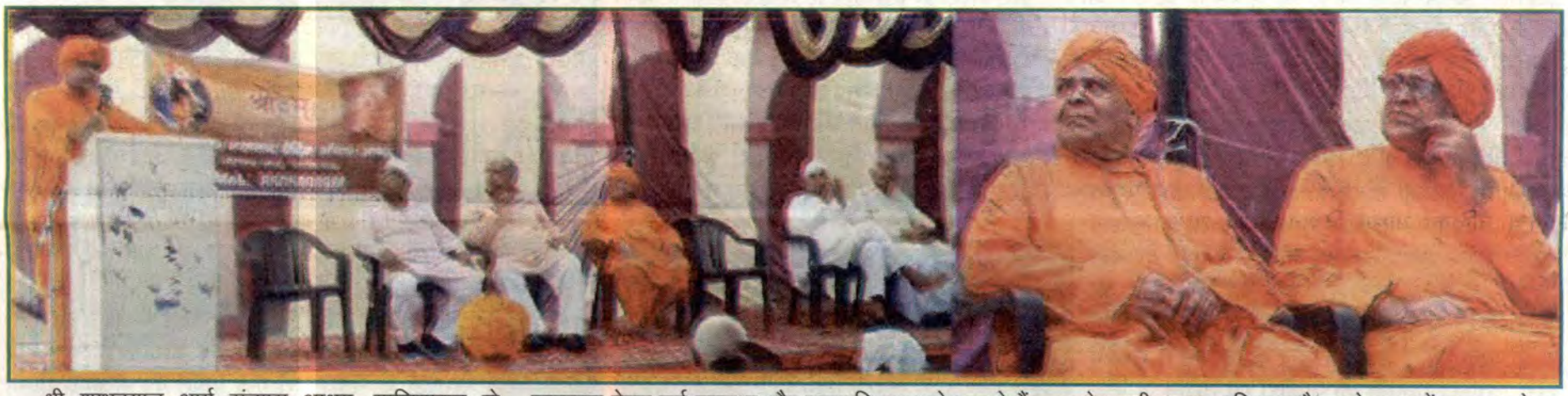

श्री शम्भूदयाल आर्य संन्यास आश्रम, गाजियाबाद के वार्षिकोत्सव के अवसर पर 23 सितम्बर, 2018 को एक महत्त्वपूर्ण संगोष्ठी का आयोजन आश्रम के अध्यक्ष पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी की अध्यक्षता में किया गया। इस संगोष्ठी का संयोजन प्रसिद्ध वैदिक विद्वान प्रो. रतन सिंह जी के सुपुत्र श्री सत्यकेतु एडवोकेट ने किया। इस अवसर पर आर्य समाज के अतिरिक्त कई वकीलों तथा बुद्धिजीवियों को संगोष्ठी में सम्मिलित किया गया। इस संगोष्ठी का विषय "छुआछूत एवं जातिप्रथा पर वैदिक दृष्टिकोण" रखा गया।

वर्तमान समय में वर्ण व्यवस्था एवं मनुस्मृति को लेकर प्रायः यह दुष्प्रचार किया जाता है कि मनु महाराज और उनकी मनुस्मृति जन्म से ऊँच–नीच और जातिप्रथा को मानते हैं। इसी प्रकार वर्ण व्यवस्था भी जन्मना जाति प्रथा की पोषक है। इस विचार को लेकर समाज के दलित वर्ग को वर्ण व्यवस्था, मनुस्मृति तथा मनु जी के सम्बन्ध में भ्रमित किया जाता है। इस भ्रांति का निवारण करने के लिए यह आवश्यक है कि वैदिक दृष्टिकोण समाज के सामने सही तरीके से प्रस्तुत किया जाये। उपस्थित श्रोताओं में विषय की गम्भीरता को देखते हुए विशेष जिज्ञासा एवं कौतुहल था। इस विषय पर पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने अत्यन्त विद्वतापूर्ण एवं प्रभावशाली शैली में अपने विचार प्रकट करते हुए बताया कि जो लोग किन्हीं अवैदिक ग्रन्थों का उदाहरण देकर वर्ण व्यवस्था और मनुस्मृति पर आक्षेप करते हैं तथा इन्हें जन्मना जाति का पोषक बताते हैं उनके समक्ष हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि वेद या मनुस्मृति, मनु एवं वर्ण व्यवस्था किसी भी रूप में जन्मना जातिवाद की पोषक नहीं है। वैदिक दृष्टिकोण के अनुसार गुण, कर्म, स्वभाव एवं योग्यता के आधार पर ही मनुष्य का वर्ण निर्धारित होता है। जन्म से कोई किसी वर्ण में पैदा हुआ हो वह अपने पुरुषार्थ, अपनी विद्या एवं योग्यता से वर्ण परिवर्तन कर सकता है। इसलिए जन्म से कोई ऊँच–नीच नहीं होता, बल्कि जन्म से सभी शूद्र ही माने जाते हैं।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए वैदिक वर्ण व्यवस्था को जन्म आधारित नहीं अपितु श्रेष्ठता एवं योग्यता आधारित बताया। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश में मनुस्मृति का यह श्लोक उद्धृत कर लिखते हैं –

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्।
क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च।। मनु. (10/65)

"जो शूद्र कुल में उत्पन्न होकर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य के समान गुण–कर्म–स्वभाव वाला हो तो वह शूद्र, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य हो जाये। वैसे ही जो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य कुल में उत्पन्न हुआ है तो उसके गुण–कर्म–स्वभाव शूद्र जैसे हों तो वह शूद्र हो जाये। इसी प्रकार क्षत्रिय व वैश्य के कुल में उत्पन्न होकर ब्राह्मण व शूद्र के समान होने से ब्राह्मण शूद्र भी हो जाता है। अर्थात् चारों वर्णों में जिस–जिस वर्ण के सदृश जो पुरुष व स्त्री हो वह–वह उसी वर्ण में गिने जायें।

इस तरह से आर्य समाज एवं वैदिक दृष्टिकोण के अनुसार जन्मना जाति और छुआछूत का कोई औचित्य नहीं है। यह सभी मनुष्यकृत, सामाजिक विकृति है और इसको ठीक करने के लिए वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था ही सही उपाय प्रतीत होता है। इस संगोष्ठी में श्री बालेश्वर त्यागी पूर्व शिक्षामंत्री उत्तर प्रदेश व श्री चन्द्रपाल शास्त्री ने भी अपने विचार रखे। महाशय जबर सिंह खारी आर्य भजनोपदेशक के मधुर भजनों का कार्यक्रम भी चलता रहा। उनके अतिरिक्त सर्वश्री मा. ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य, प्रधान जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा गाजियाबाद, श्री तेजपाल सिंह आर्य मंत्री जिलासभा, श्री सेवाराम त्यागी, प्रधान आर्य समाज संजयनगर, श्री दिनेश गोयल, श्री महेन्द्र भाई महामंत्री केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, डॉ. राजकुमार स्वदेशी फार्मेसी, श्री रामकुमार सिंह आर्य, श्री सुरेश आर्य आदि भी उपस्थित थे।

स्वामी चन्द्रवेश जी एवं श्री सत्यकेतु एडवोकेट ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। आश्रम के आचार्य श्री जितेन्द्र जी ने भोजन की व्यवस्था संभाली।

श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् के प्रथम अधिवेशन की कुछ चित्रमय झलकियाँ

आर्य समाज बीकानेर गंगायचा अहीर, रेवाड़ी, हरियाणा का 76वाँ वार्षिकोत्सव उत्साह एवं धूमधाम से सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का हुआ ओजस्वी उद्‌बोधन

आर्य समाज बीकानेर गंगायचा अहीर, रेवाड़ी, हरियाणा का 76वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 22–23 सितम्बर, 2018 को आर्य समाज के प्रांगण में बड़ी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। उत्सव में श्रोताओं की उपस्थिति अत्यन्त उत्साहवर्द्धक एवं प्रभावशाली रही। आर्य समाज का विशाल प्रांगण प्रबुद्ध स्त्री–पुरुषों से खचाखच भरा रहा और दोनों दिन अन्य प्रमुख व्यक्ति तथा आर्यजन उत्सव में सम्मिलित हुए।

उत्सव में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त गुरुकुल झज्जर के अधिष्ठाता आचार्य विजयपाल, वेद प्रचार मण्डल रेवाड़ी के प्रधान आचार्य यशदेव आर्य, गौशाला नांगलिया के संचालक स्वामी जीवानन्द नैष्ठिक, आश्रम किशनगढ़ के संचालक स्वामी ब्रह्मानन्द एकान्ती, सोममुनि, बैरावास कला, भगवती कन्या गुरुकुल जसात के संचालक डॉ. रवि चौहान, आर्य समाज जयगढ़ के प्रधान श्री रघुनाथ सिंह आर्य, गुरुकुल किशनगढ़ घासेड़ा के प्रधानाचार्य श्री सत्यव्रत, शांतिधर्मी के सम्पादक श्री सहदेव समर्पित, आर्य समाज के युवा विद्वान आचार्य सोमदेव जी, महाशय हरि सिंह आर्य, महाशय धर्मपाल आर्य, महाशय बंशीराम आर्य के अतिरिक्त प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क, श्री कुलदीप भास्कर, श्रीमती कल्याणी आर्या एवं श्रीमती धर्मरक्षिता आदि भी उत्सव में सम्मिलित हुए। विद्वानों एवं भजनोपदेशकों के कार्यक्रमों से श्रोताओं ने विशेष लाभ उठाया।

22 सितम्बर, 2018 को मध्यान्ह के सत्र में स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्‌बोधन हुआ जिससे वातावरण में एक विशेष उत्साह एवं जोश पैदा हो गया। स्वामी आर्यवेश जी ने वर्तमान में चल रहे अनेक अन्धविश्वासों, पाखण्ड एवं विभिन्न सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध प्रचण्ड अभियान चलाने का आह्‌वान किया। उन्होंने महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डालते हुए वेदों के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा एवं निष्ठा को अद्‌भुत बताया। महर्षि दयानन्द के समक्ष जिस समय ब्रह्म समाज के केशवचन्द सेन ने यह प्रस्ताव रखा कि वे कोई नया संगठन बनाने के बदले ब्रह्म समाज को ही अपने अधिकार में ले लें और जो कार्य आप करना चाहते हैं वह इसके माध्यम से करें तथा ब्रह्म समाज के सभी सदस्य एवं अनुयायी आपके अधीन काम करेंगे। इसके अतिरिक्त इसके सभी साधन आप उपयोग कर सकेंगे, किन्तु केवल एक शर्त स्वीकार कर लें कि वेदों को अपौरुषेय मानना बन्द कर दें। महर्षि दयानन्द ने उनके इस प्रस्ताव को अविलम्ब अस्वीकार कर दिया। इसी प्रकार प्रार्थना समाज के लोगों ने भी स्वामी जी के समक्ष इसी तरह का प्रस्ताव रखकर प्रार्थना समाज उन्हें सौंपने की बात कही, किन्तु शर्त वही कि वेदों को अपौरुषेय न मानें। परन्तु स्वामी दयानन्द जी ने उनके इस प्रस्ताव को भी स्वीकार नहीं किया। इस प्रकार ऐसी अनेक घटनाएँ उनके जीवन में आई हैं जिससे उनकी वेदों के प्रति निष्ठा एवं प्रतिबद्धता का परिचय मिलता है। महर्षि दयानन्द एक निर्भीक संन्यासी थे और वे वेदों के प्रचार–प्रसार में सर्वात्मना जीवन के आखिरी श्वांस तक समर्पित रहे। स्वामी जी ने कहा कि आज वेद विरुद्ध विचारधाराएँ पूरे समाज में फैलती जा रही हैं। ऐसे में आर्य समाज के प्रत्येक कार्यकर्ता को महर्षि के जीवन से प्रेरणा लेकर वेद के प्रचार–प्रसार में पूरी शक्ति लगा देनी चाहिए।

आर्य समाज बीकानेर के सफल उत्सव से प्रभावित होकर स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज के सभी कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों को विशेष साधुवाद देकर उत्साहित किया। उत्सव की व्यवस्था में आर्य समाज के प्रधान डॉ. महेन्द्र कुमार, मंत्री प्रिं. राममेहर सिंह, कोषाध्यक्ष प्रिं. धर्मवीर सिंह, संरक्षक श्री ईश्वर सिंह एवं कर्मठ कार्यकर्ता श्री अशोक आर्य, श्री वेदपाल आर्य एवं श्री विजय आर्य ने पूरी शक्ति लगाकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

यज्ञीय परम्परा के संवाहक आर्यरत्न श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री का 78वाँ जन्मोत्सव बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

अनेक गणमान्य महानुभावों ने दी उन्हें शुभकामना

आर्य जगत की महान विभूति महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज द्वारा विशेष रूप से प्रेरित एवं संस्कारित यज्ञीय परम्परा के संवाहक आर्य समाज के गौरव आर्यरत्न श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री का 78वाँ जन्मोत्सव 16 सितम्बर, 2018 को वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आर्यनगर, रोहतक, हरियाणा की भव्य यज्ञशाला में मनाया गया। वैदिक भक्ति साधन आश्रम की स्थापना महात्मा प्रभु आश्रित जी ने की थी और उसके वर्तमान में प्रधान स्वयं श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री हैं। इसलिए उन्होंने अपना जन्मदिन महात्मा जी की तपःस्थली पर ही मनाने का निश्चय किया। श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री आर्य जगत के प्रसिद्ध दानवीर, समाजसेवी एवं यज्ञीय परम्परा के संवाहक हैं। उनके परिवार में दैनिक यज्ञ की परम्परा पिछले लगभग 100 साल से चल रही है और वे स्वयं उस परम्परा को बड़ी श्रद्धा एवं निष्ठा के साथ चला रहे हैं। श्री अग्निहोत्री जी समस्त गुरुकुलों, गौशालाओं एवं यज्ञशालाओं के लिए बड़े उत्साह के साथ दान देते हैं तथा अपने जीवन को इसके लिए धन्य मानते हैं। उनके स्वभाव में सौम्यता एवं सरलता का सुन्दर सामंजस्य है। वे अत्यन्त मृदुभाषी, व्यवहार कुशल एवं सहृदय व्यक्तित्व के धनी हैं। यज्ञ के प्रति उनकी श्रद्धा अद्वितीय है। उनके संरक्षण में अनेक संस्थाएँ संचालित हो रही हैं जिन्हें वे अपना सर्वप्रकार से सहयोग प्रदान करते हैं। मुख्यतया वैदिक तपोवन आश्रम, देहरादून, आर्ष गुरुकुल एटा, आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़, वैदिक भक्ति साधन आश्रम, रोहतक, दर्शन योग महाविद्यालय, सुन्दरपुर कुटिया, रोहतक आदि संस्थाओं के वे प्रधान पद को सुशोभित कर रहे हैं। वे संन्यासियों एवं विद्वानों को समय–समय पर सम्मानित करते रहते हैं। गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों को छात्रवृत्ति एवं बृहद यज्ञों में विशेष आर्थिक सहयोग उनकी रुचि के कार्य हैं। श्री दर्शन कुमार जी आर्य समाज के तपोनिष्ठ संन्यासी स्वामी दीक्षानन्द जी महाराज के भी विशेष श्रद्धालु हैं। प्रतिवर्ष स्वामी दीक्षानन्द जी की पुण्यतिथि पर वे अपने ट्रस्ट की ओर से भव्य आयोजन एवं विद्वत् सम्मान करते हैं। ऐसे प्रतिष्ठित दानवीर, आर्यश्रेष्ठी के जन्मोत्सव समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी उन्हें अपनी शुभकामनाएँ तथा साधुवाद देने के लिए वैदिक भक्ति आश्रम, रोहतक में आयोजित कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। उनके अतिरिक्त केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं संयोजक बहन पूनम आर्या एवं प्रवेश आर्या तथा रोहतक की विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारी भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर विशेष यज्ञ का अनुष्ठान किया गया जिसके ब्रह्मा पद को प्रसिद्ध विदुषी कन्या गुरुकुल, रुढ़की (रोहतक) की आचार्या डॉ. सुकामा जी ने सुशोभित किया। उनके साथ उनके गुरुकुल की छात्राओं ने सुन्दर सस्वर वेद पाठ के द्वारा यज्ञ सम्पन्न कराया। कन्या गुरुकुल की अन्य छात्राएँ भी काफी संख्या में यज्ञ में सम्मिलित थीं। दर्शन योग महाविद्यालय सुन्दरपुर के विद्यार्थी भी इस अवसर पर आचार्य जी के साथ यज्ञ मण्डप में उपस्थित थे। यज्ञ के उपरान्त श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री जी का शॉल एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर अभिनन्दन किया गया तथा वक्ताओं ने उन्हें शुभकामनाएँ प्रदान की। इस पूरे कार्यक्रम का संयोजन वैदिक भक्ति साधन आश्रम, रोहतक के मंत्री श्री वेद प्रकाश आर्य ने किया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से आर्य समाज माडल टाऊन के प्रधान श्री देशराज ठक्कर, श्री वेद प्रकाश आर्य, श्री बलराज खुराना, दिल्ली से पधारे श्री योगराज अरोड़ा, श्री रामभज मदान, श्रीमती प्रवीण आर्या आदि महानुभाव में सम्मिलित हुए और श्री अग्निहोत्री जी को अपनी शुभकामनाएँ देकर उनके शतायु होने की कामना की।

स्वामी आर्यवेश जी ने जहाँ श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री के सामाजिक कार्यों के लिए उनकी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की वहीं उनके शतायु होने की भी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना एवं कामना करके उन्हें साधुवाद एवं बधाई दी। स्वामी जी ने श्री अग्निहोत्री जी की धर्मपत्नी माता सरोज अग्निहोत्री जो वहाँ पर विद्यमान थीं के लिए उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की कामना की। कार्यक्रम बहुत ही सुन्दर तरीके से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के प्रश्चात श्री अग्निहोत्री जी ने उपस्थित विद्वानों का सम्मान करके विदाई दी। प्रसाद वितरण के पश्चात् प्रीतिभोज की सुन्दर व्यवस्था की गई थी।

आर्य जगत् के गौरव
प्रो. महावीर अग्रवाल, राष्ट्रपति सम्मान के लिए चयनित

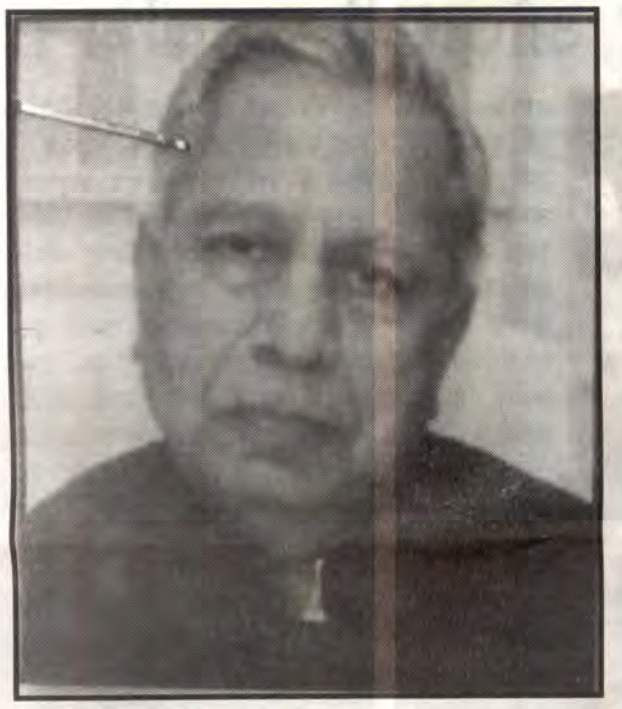

उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्य एवं कुलपति, कुलसचिव एवं उत्तराखण्ड संस्कृत अकादमी के पूर्व उपाध्यक्ष प्रो. महावीर अग्रवाल को 2018 के राष्ट्रपति पुरस्कार के लिए चयनित किये जाने के समाचार से सम्पूर्ण देश के संस्कृत जगत् में प्रसन्नता की लहर व्याप्त हो गई।

वर्तमान में पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार में प्रति–कुलपति के पद पर कार्य करते हुए संस्कृत, संस्कृति, योग एवं आयुर्वेद के उन्नयन में सर्वात्मना समर्पित प्रो. महावीर अग्रवाल का बहुआयामी व्यक्तित्व अनेक उपलब्धियों से परिपूर्ण है। 44 वर्ष तक उच्च शिक्षा में विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए आपने अनेक सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त किये हैं। वेद एवं महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों में अटूट निष्ठा रखने वाले वैदिक विद्वान प्रो. महावीर का समन्वयवादी चिन्तन, विनम्र व्यवहार, अहंकार शून्य आचरण सबको आपसे जोड़ देता है। संस्कृत, हिन्दी के वाग्मी प्रो. अग्रवाल की सैकड़ों संस्कृत वार्ताएं आकाशवाणी केन्द्रों से तथा वेद, उपनिषद्, गीता आदि विषयों पर अनेक प्रवचन दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों पर प्रसारित हुए हैं।

आपके निर्देशन में लगभग 75 शोधार्थियों ने शोध कार्य पूर्ण कर पी.एच.डी. उपाधि प्राप्त की है। आपने न केवल देश के विभिन्न राज्यों और विश्वविद्यालयों में अपितु अमेरिका, इंग्लैण्ड, थाईलैण्ड, नेपाल आदि देशों में भी अन्तर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठियों में भारत का प्रतिनिधित्व किया है। भारत के शताधिक विश्वविद्यालयों में आपको ससम्मान विषय विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया जाता है। महाराष्ट्र राज्य के एक बहुत छोटे से गाँव में प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण कर, शिक्षा जगत् में ऐसा सम्मानजनक स्थान प्राप्त करने वाले महामहोपाध्याय प्रो. अग्रवाल अपनी भाषा, संस्कृति एवं देश के प्रति अटूट निष्ठा रखते हैं। आपने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय एवं उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय में कार्य करते हुए अनेक अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृत सम्मेलनों का आयोजन किया। आप प्राच्य विद्याओं के सबसे बड़े और प्राचीनतम् संगठन अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन के अध्यक्ष पद को भी विभूषित कर चुके हैं।

ऐसे मनीषी, सरस्वती पुत्र को राष्ट्रपति पुरस्कार प्रदान किये जाने की घोषणा से देवभूमि उत्तराखण्ड के संस्कृतानुरागी जन अत्यन्त प्रसन्न है।

– डॉ. विनोदचन्द्र विद्यालंकार
217, आर्य विरक्त (वानप्रस्थ संन्यास) आश्रम,
ज्वालापुर–249407 (हरिद्वार)

पृष्ठ–2 का शेष

भारतीय संस्कृति और नारी वैशिष्टय

आदिशक्ति, महाशक्ति, सर्वशक्ति मानकर इसकी पूजा अर्चना की गई है।

स्त्री विविध शक्तियों को धारण करने वाली एक ऐसी बिम्ब है जो अपनी शक्ति का प्रकाशन जनजीवन में चेतना जाग्रत करने के लिए करती रहती है। वह अपनी शक्ति के कारण स्वयं क्रियाशील तो रहती ही है साथ ही पुरुषों को भी शक्ति सम्पन्न बनाती है। प्रसिद्ध विचारक और नारी शक्ति की महिमा से अनुप्रेरित विनोबा भावे सदैव स्त्री को महान शक्ति की धारिका स्वीकार करते रहे हैं। उनके विचारों में नारी शक्ति का प्रस्फुटन एक नए रूप में होता है। वे कहा करते थे – स्त्रियों में तो शक्ति है ही पुरुषों में भी नारी शक्ति विद्यमान है। पुरुषों में नारी शक्ति। सचमुच विनोबा का यह एक विलक्षण चिन्तन है। परन्तु इसे हम आश्चर्यजनक नहीं कह सकते हैं। क्योंकि स्त्री निःसंदेह विलक्षण और परस्पर विरोधी गुणों से युक्त परमशक्ति सम्पन्न प्राणी है। एक ओर यदि वह अबला तथा रक्षण करने योग्य हैं तो दूसरी तरफ वह सबला भी है।

भारतीय संस्कृति में नारी शक्ति को विलक्षण रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसकी महनीयता का चित्रण करते हुए इसे अपरमपार कहा गया है। नारी को उसकी शक्ति के कारण 'जगत जननी' जैसे विशेषणों से अलंकृत किया गया है। इसकी शक्ति की आराधना नारी–प्रतिमाओं के रूप में की जाती है। यही नारी शक्ति महान विभूति सम्पन्न महिषासुर, भस्मासुर के आतंक से मानवता को उस समय त्राण दिलाती है जब समस्त शक्तियाँ पराभूत हो चुकी होती हैं। सृष्टि प्रक्रिया का प्रारम्भ हो अथवा विध्वंसकारी शक्तियों के अंत करने का प्रश्न हो, प्रत्येक अवस्था में नारी शक्ति ने मानवता की रक्षा के लिए विविध रूपों को धारण किया है। अर्द्धनारीश्वर सृष्टि प्रक्रिया की व्याख्या करता है तो दुर्गा, काली आदि विध्वंसकारी शक्तियों का अन्त करने वाली नारी शक्ति का जीवन रूप हैं। सचमुच नारी शक्ति ही आदि शक्ति है। यही सर्वशक्ति है। इससे इतर और किसी शक्ति की परिकल्पना भारतीय संस्कृति में उपलब्ध नहीं है। यहाँ विविध शक्तियों का प्रारम्भ इसी आदि शक्ति से निःसृत माना गया है।

भारतीय संस्कृति और नारी पर्याय

भारतीय संस्कृति में नारी वैशिष्टय के परिचायक उसके विविध नाम हैं। नारी विभिन्न गुणों से युक्त होती है और इन गुणों के आधार पर यह विभिन्न नामों से जानी जाती है। इनके गुणों के प्रदर्शन करने वाले कुछ प्रमुख नाम हैं – स्त्री, नारी, महिला, सुन्दरी, प्रमदा, मानिनी, दुहिता, अबला, ललना, ग्ना, मेना, जाया, वामा, योधा आदि। ये सभी शब्द भारतीय संस्कृति में नारी वैशिष्टय को उजागर करते हैं। क्योंकि ये मात्र नारी के अस्तित्व के बोधक ही नहीं, बलिक अपने अन्दर से एक इतिहास को जन्म देते हैं जो भारतीय संस्कृति का एक उज्ज्वल पक्ष है। कारण प्रत्येक शब्द अपपने वाच्यार्थ के रूप में एक संकेत प्रस्तुत करता है जो उसकी महत्ता और विशिष्टता का बोधक भी होता है।

स्त्री – स्त्री शब्द 'स्त्यै' धातु से बना है। यास्क के मतानुसार 'स्त्यै' का अर्थ लज्जा से सिकुड़ना है। लज्जा स्त्री का प्रधान गुण है। अतः स्त्री को स्त्री इसलिए कहते हैं, क्योंकि वह लजाती है।

नारी – नारी शब्द 'नृ' अथवा 'नर' से बना है। नृ+अस्–ङीप्=नारी। यास्क ने नर शब्द को 'नृत्' नाचना से बनाया है। इसी विशेषण के आधार पर स्त्री को नारी कहा गया है। कहीं–कहीं इसके लिए 'नारिः' पाठ मिलता है।

ललना – ललना शब्द 'लल' अर्थात् इच्छा करने से बना है। स्त्री में लालसा, इच्छा, चाह आदि की प्रबलता रहती है। अतः वह ललना कहलाती है।

मानिनी – मानिनी शब्द स्त्री के मनोवैज्ञानिक पक्ष को उजागर करता है। वह मानप्रिय, स्वभामिनी, आत्म सम्मान की भावना से युक्त होती है। उसके सौन्दर्य, गुण, कार्य आदि की प्रतिकूल आलोचना होने से वह आहत होती है। वह ऐसी आलोचना को बर्दाश्त नहीं कर सकती। अतः वह मानिनी होती है।

सुन्दरी – सु+उन्द (=गीला करना)+अर+ङीप्= सुन्दरी। नारी को सुन्दरी इसलिए कहते हैं क्योंकि उसे देखने मात्र से पुरुष का हृदय द्रवित (गीला) हो उठता है।

पाणिग्रहीता – 'पाणि' अर्थात् विवाह के पश्चात् स्त्री–पुरुष की पत्नी बन जाती है इसलिए नारी सहधर्मिणी कहलाती है।

कुटुम्बिनी – पति पुत्र अथवा कुटुम्ब के पोषण करने के कारण स्त्री कुटुम्बिनी के नाम से जानी जाती है।

उपर्युक्त चिन्तन भारतीय संस्कृति में परिव्याप्त नारी वैशिष्टय की झांकी प्रस्तुत करता है।

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' पुस्तक अवश्य पढ़ें

– लेखक स्व. पं. चमूपति एम. ए.

'योगेश्वर श्रीकृष्ण' नामक पुस्तक पृष्ठ संख्या–256, अच्छे जिल्द एवं कागज में छपकर तैयार है। जिसकी कीमत 100/: रुपये है, जिस पर 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध है। परन्तु भेजने में डाक व्यय खर्च होता है। अतः एक पुस्तक मंगाने के लिए डाक व्यय सहित 100/– रुपये भेजकर मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "महर्षि दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

दूरभाष :–011–23274771, 23260985

सार्वदेशिक सभा द्वारा चारों दर्शनों एवं संस्कार विधि का पुनर्प्रकाशन

भाष्यकार तर्क शिरोमणि – स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

1. वेदान्त दर्शन	– पृष्ठ 232	–	मूल्य 100 रुपये
2. वैशेषिक दर्शन	– पृष्ठ 248	–	मूल्य 100 रुपये
3. न्याय दर्शनम्	– पृष्ठ 240	–	मूल्य 100 रुपये
4. सांख्य दर्शन	– पृष्ठ 156	–	मूल्य 80 रुपये
5. संस्कार विधि	– पृष्ठ 278	–	मूल्य 90 रुपये

बढ़िया कागज, सुन्दर प्रिंटिंग व आकर्षक टाइटल के साथ 25 प्रतिशत छूट पर सभा कार्यालय में उपलब्ध है।

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

आवश्यकताऽऽविष्काराणां जननी भवति

– डॉ. केशव प्रसाद उपाध्याय, प्रधानाचार्य गुरुकुलमहाविद्यालयः ज्वालापुरम्, हरिद्वारम् (उत्तराखण्ड)

यानि वस्तूनि स्वप्नेऽपि नानुभूतानि, येषां स्वरूपस्य कल्पनाऽपि मानसं नावगाहते स्म। यदि प्रकृत्या तेषामावश्यकता कस्यापि कृते प्रसूयते, तानि वस्तूनि निर्मातुं स प्रवर्तते। अयमेवार्थो विवेच्यतया शीर्ष स्थाने लिखितस्यास्य प्रबन्ध विषयस्य।

यदि वयं पुरातन युगेतिहासेषु दृष्टिं क्षिपामः, यदा सभ्यता प्रारम्भोऽपि नासीत्, आविष्काराणाम् आवश्यकतामेव प्रसूता इदं स्पष्टमवगच्छाम्। तस्मिन् समये मनुष्याः पशुवत् वर्त्तन्तेस्म, पत्रेषु भुज्जतेस्म, वस्त्राणामुपयोगं नाज्ञासिषुः, वृक्ष शाखासु कुशकासादि सङ्कलायां वा धरायां अशयिषत् ते अस्त्राणामुपयोगे वह्निन कार्यं च नाविदन्। परमयं समयोऽपगतः क्रमशस्त एव मानवाः सीतातपवात्याभ्यः स्वं गोपायितुं गृहस्यावश्यकताम् अनुभवितुमारभन्त। ततश्च गृहनिर्माणप्रक्रिया मुदभावयन्, एवं वस्त्राणां स्थाने पशूनां चर्माणि समुपायुज्यत।

यदा च मनुष्याः परेभ्यः स्वस्य रक्षाया आवश्यकता मनसि विविदुः। भोजनार्थं पशूनां मांसं चापेक्षितवन्तस्तदनन्तरं प्रस्तर खण्डानि तेष्वेव संघृष्य नाना विधानि शस्त्राण्यस्त्राणि च निरमायिषु र्यैर्भेदनच्छेदनादि कार्यं सुकरं समपद्यत। कतिचित् सराणि चामयासमश्नतां तेषां जाते मुख वैरस्ये ते पाक–क्रियाया आवश्यकतां निरधारयन्, यतस्ते पाक प्रक्रियामनुसमधिषत।

उपर्युक्ताद् विवरणादिदमवधार्यते, किमपि वस्तु बलादिवाविष्कारयति। एवं हि वस्तुस्थितः कोऽपि किमपि वस्तुं विना कस्याश्चित् कठिनायां स्थितौ पतति, न चोपलभते प्रतिकारपथम् विमानायते च तदनुपलब्ध्या, ततः कंचनोपायं तत्प्रतीकारस्य सर्वात्मना चिन्तयति लभते च तदुपाया एवाविष्कार स्वरूपतया परिणमन्ते।

यदि मनुष्यः कश्चित् सर्वमपि मनोभिलषितं वस्तु सद्य एवाधिगच्छेत्, न प्रतिबद्धमनोरथतया खिद्येत। किमर्थं स व्याप्रियेत चेतसि, कुतश्च निर्गच्छेयुर्नवा पदार्थाः। परमत्र प्रतिक्षणं नूतनतामर्थयमाने जगति केवलं भोजनेनाच्छादनेनैव च मानवस्य तृष्णा नोपशाम्यति। स किमप्यन्यदपि कामयते, तदर्थमपि तस्य बुद्धिर्व्याप्रियते, ततोऽपि च बहव आविष्काराः जन्म लभन्ते।

अत्र जगति बहव ईदृशा अपि सन्ति पदार्थाः येषामाविष्कारा नावश्यकतापारवश्यकृतः, यथा वाष्पशक्तिविद्युदादिकाः पदार्थाः, तानन्तरापि मनुष्यां जीवनं न प्रत्यवध्यत। एवं च आविष्कारा आवश्यकताभिरेव जन्यन्त इति रिक्तवचः इति श्रुवतः प्रतिवक्तव्यं यतः मानवानामावश्यकता न केवलं कायिक्य एव भवन्ति, ते मानसिक भोजनं लब्धुं प्रयतन्ते। जातेऽपि जीवन धारणोपाये मानसिकं तद् भोजनं च तदीयाविरतबुद्धिव्यापार प्रभावेण समुपह्निनयते, व्याप्रियन्ते, तदाऽऽविष्कारा जन्म गृह्णन्ति, शब्द प्रसारणयन्त्रम्, वायुयानम्, तडित्पत्रम् इत्यादय एवं प्रकारा एव।

एवं हि श्रूयते कुत्रापि पर्वत शिखरे समासीनः एकः काकः पिपासा क्षामकण्ठो भूमौ विवरे जलमपश्यत्, पर्वत शिखराश्च भुवमवतार परं भुवि समवतीर्णस्यातिस्य विवरस्थं जलं पातुं शक्तिर्नाभवत्। पिपासया पीडितश्च स इतस्ततः पश्यन्नपि किमपि वर्त्म नाद्राक्षीत्। जलं विना शुष्यदाननविवरस्य तस्य मनस्येक उपायः स्फुरति स्म। तत्र वर्तमानानि लघूनि प्रस्तर खण्डानि चंचुपुटेनादाय विले क्षप्तुमारभत, तेन विले भृते तत्रत्यं जलं बहिरभवत्। स काकः स्वां पिपासां शमितवान्।

दृश्यतामत्र कथायामाविष्कारः कथमावश्यकता बाधितेन काकेन व्यधीयत। यदि पक्षिषु एतादृशी स्थितिः, का कथा पुरुषाणाम्? 'थोमस एडिसन' महोदयः कियतांशेन बधिरोऽतः शब्दव्यापारान्वेषणप्रवृत्तश्चासीत्। अनुसंधान प्रवृत्तेनैव तेन 'फोनोग्राफ' नामकं यन्त्रमाविष्कृतं यद्धुना प्रतिपल्लब्धसंचारम् अस्माकमेव देशस्यालङ्कारः श्रीमान् इन्दुमाधवमलिक महोदयः स्वयं प्रवाहिकया पीड़ित आसीत्, स सुपचं भोजनं पक्तुं प्रकारमनुसन्दधान एकं यन्त्रमाविष्कृतवान् यदधुना जनाः 'कुकर' इति नाम्ना व्यवहरन्ति।

एतावता समर्थितं साधु तथ्यमिदं यद् यदा कापि परमावश्यता पुमांसं व्याकुलयति, तदा तदीया मतिर्न विश्राममधिगच्छति। अविश्रान्तं व्याप्रियमाणा च समतिः सुप्तां स्वां शक्तिमुब्दोधयति। तत्प्रभावेणैव चालसाः सव्यापाराः दुर्बला बलवन्तः अविचारकाः विचार चतुराश्च सम्पद्यन्ते। जगतः सर्वोऽपि व्यापार आवश्यकता प्रसूत एव। याद्यवश्यकता दिनानुदिनं नैधैत, यथावस्थितमिदं जगत् पदपति पुरतो न स्पन्देत। प्रतिदिनं वर्धमाना जनसंख्याऽऽवश्यकतां वर्द्धयन्ती संहार कराण्यस्त्राण्यपि समुत्पादयति। अतः केनापि साधुसमर्थितमिदं यद् –

आविष्कारा आवश्यकतया जन्यन्ते।

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम) टिटौली, रोहतक (हरियाणा) में
सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के कर्मठ कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों की एक महत्त्वपूर्ण बैठक
स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में हुई सम्पन्न
सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं परिषद् के प्रमुख पत्र 'राजधर्म' की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में
10 मार्च, 2019 को स्वर्ण जयन्ती का भव्य समारोह मनाने का लिया गया निर्णय
हजारों आर्य युवकों का एक गणवेश एवं केसरिया पगड़ी में होगा प्रचण्ड शक्ति प्रदर्शन

नौजवानों! अभी से तैयारी प्रारम्भ कर दो

आर्य समाज के सशक्त एवं सक्रिय युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की स्थापना सन् 1967–68 में युवाओं के प्रेरणा स्रोत, त्यागी, तपस्वी, तेजस्वी संन्यासी पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी द्वारा की गई थी। परिषद् के तत्वावधान में हजारों युवा निर्माण शिविर आयोजित करके लाखों युवकों को आर्य समाज से जोड़ने का ऐतिहासिक योगदान किया है। परिषद् की स्थापना के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में परिषद् के संस्थापक पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के जन्मदिवस 10 मार्च, 2019 को एक भव्य स्वर्ण जयन्ती समारोह आयोजित किया जा रहा है। इसी के साथ परिषद् के प्रमुख पत्र 'राजधर्म' के गौरवमय प्रकाशन के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में भव्य स्वर्ण जयन्ती समारोह आयोजित किया जायेगा।

यह दोनों कार्यक्रम एक साथ आयोजित होंगे। इस सम्बन्ध में निर्णय लेने के लिए गत् 16 सितम्बर, 2018 को परिषद् के कर्मठ कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों की एक हंगामी बैठक परिषद् के प्रधान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, जिला–रोहतक में सम्पन्न हुई। बैठक में उपस्थित सभी कार्यकर्ता अत्यन्त उत्साहित थे और बड़े जोश–खरोश के साथ स्वर्ण जयन्ती समारोह को मनाने के लिए सभी ने पूरी ताकत लगाकर कार्य करने का संकल्प लिया। यह स्वर्ण जयन्ती समारोह आर्य समाज में युवाओं को दीक्षित करने के लिए अपनी विशेष भूमिका निभायेगा। परिषद् ने निश्चय किया है कि पिछले 50 सालों में जिन–जिन महानुभावों ने परिषद् में कार्य किया है उनका समारोह में विशेष सम्मान किया जायेगा। यह प्रयास किया जायेगा कि 50 जीवनदानी कार्यकर्ता परिषद् का कार्य करने के लिए उस दिन संकल्प ले सकें। स्वर्ण जयन्ती समारोह की विस्तृत योजना एवं कार्यक्रम शीघ्र ही तैयार करके पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा। बैठक में मुख्य रूप से परिषद् के महामंत्री श्री बिरजानन्द जी एडवोकेट, उपमंत्री प्रिं. आजाद सिंह जी, परिषद् की हरियाणा इकाई के पूर्व प्रधान श्री रामनिवास जी, डॉ. राजपाल आर्य, श्री सज्जन सिंह राठी, श्री अशोक आर्य, श्री अजीत पाल आर्य, श्री सत्यवीर आर्य, डॉ. होशियार सिंह, श्री श्यामलाल आर्य, श्री हरिकेश राविश एडवोकेट, श्री तलवीर सिंह आर्य, श्री महेन्द्र सिंह आर्य, श्री जयवीर आर्य सोनी, मा. हरपाल सिंह, मा. प्रवीण कुमार, बहन पूनम आर्या, बहन प्रवेश आर्या, कु. रिंकू आर्या, कु. शशि आर्या, एच.सी.एस., कु. रीमा आर्या आदि उपस्थित थे। बैठक का संयोजन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने बड़ी कुशलता से किया।

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 12–13 अक्टूबर, 2018
प्रकाशन की तिथि : 11 अक्टूबर, 2018
वैदिक सार्वदेशिक
11 से 17 अक्टूबर, 2018
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माधयम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

श्रीमद् दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् के प्रथम अधिवेशन की कुछ चित्रमय झलकियाँ

प्रो० विद्वलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विद्वलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।